"याद"

आज न जाणी फिर दिल मा कुतगाली लैगी
अपड़ा प्यारा मुल्क की याद ऐगी।
जख अपड़ू प्यारु बच्चपन गुजारी
दोस्तू का गैला ँह सी दोस्तू तैं भी ँहसाई
आज न जाणी फिर दिल मा कुतगाली लैगी
अपड़ा प्यारा मुल्क की याद ऐगी।
बाबा न हाथ पकड़ी घुमाई
बोई न अपडा आँ चल कु प्यार दिलाई
आज न जाणी फिर दिल मा कुतगाली लैगी
अपड़ा प्यारा मुल्क की याद ऐगी।
बच्चपन मा जंगल जैक कखी गोरु चराई
हिसर, काफल और किनगोड़ भी खाई
कभी बच्चपन मा काकडी चुराई
आज न जाणी फिर दिल मा कुतगाली लैगी
अपड़ा प्यारा मुल्क की याद ऐगी।
तौं रौंत्याला डाँ डे , तौं बुराँ स का फूलू
तै ठंडा पाणी , तौं बर्फीली हवा
कि याद..... ।
याद त याद छ
न जाणी कखी भी
दिल मा कुतगाली लगै सकती

विपिन पंवार "निशान"